

दादी प्रकाशमणि जी से मिली हुई 51 अनमोल शिक्षायें - विशेष स्मृति दिवस निमित्त

1- हमारा फाइनल पेपर है - “नष्टोमोहा स्मूर्तिलब्धा” इस पेपर में वही पास होता है जिसकी नज़रों में सदा एक परमात्मा बाप ही दिखाई पड़ता है। अगर अन्दर में रहता कि यह मेरे सम्बन्धी, मेरी प्रापर्टी, मेरी योग्यता... यह मैं और मेरा नष्टोमोहा बनने नहीं देता। जहाँ मैं है वहाँ निर्माणता आ नहीं सकती। वह नव-निर्माण का कार्य भी नहीं कर सकते।

2- जो स्मृति स्वरूप हैं वही नष्टोमोहा बनते हैं, वही सच्चे ट्रस्टी हैं। जो स्मूर्तिलब्धा होंगे उनकी स्थिति वैभवों के आधार पर नहीं होगी। कोई हैं जो साधन वा वैभवों के आधार पर सेवा करते हैं, जीवन निभाते हैं। वह कभी भी नष्टोमोहा नहीं बन सकते। वैभवों के आधार पर न स्थिति रखो, न सेवा रखो क्योंकि अभी हम बेगर टू प्रिन्स हैं। बाबा ने हमें नया जन्म दिया, इस नये जन्म में हमारा कुछ भी नहीं। यह स्मृति और फिर नष्टोमोहा की बहुत सूक्ष्म मंजिल है।

3- हर एक को ध्यान रखना है कि मेरे दिल में कोई भी व्यर्थ किचड़ा न हो। इमप्युरिटी का किचड़ा बहुत बड़ा है। झूठ और ठगी का भी किचड़ा होता। ऐसे ही स्वभाव, संस्कारों की गन्दगी भी साफ स्वच्छ बनने नहीं देती। अगर कोई झरमुई झगमुई, परचितन, परदर्शन करते हैं तो उनकी बुद्धि में किचड़ा भरता जाता, दूसरों के प्रति दोष दृष्टि रखना, उसी प्रकार से व्यवहार करना, खुद को निर्दोषी और दूसरों को दोषी बनाना—यह भी सफाई नहीं है। जिसमें सच्चाई सफाई है वह बहुत निर्मानचित होंगे। उनके अन्दर देह अभिमान नहीं रहता। साफ दिल वाला अपनी गलतियों की करेक्शन करेगा, रियलाइज करेगा।

4- संगदोष हमारी स्थिति को बहुत खराब करता है, सच्ची लगन को तोड़ देता है। जहाँ संग का दोष लगा वहाँ निश्चय बुद्धि के बदले संशय पैदा होगा इसलिए हर एक को संग की बहुत सम्भाल करनी है। बाबा ने हमें सच की नईया में बिठाया है, कहा जाता है सच की नईया हिलेगी डुलेगी लेकिन डूबेगी नहीं क्योंकि स्वयं परमात्मा उसका खिवैया है। उसके सामने कितनी भी कोई कठिनाई आये, वह सहज पार कर लेता है। वह कभी दूसरे के संग में, बहकावे में नहीं आता।

5- कईयों के सामने अनेक प्रकार के विघ्न पेपर बनकर आते हैं। कभी बीमारी के रूप में पेपर आता, कभी लौकिक अलौकिक परिवार की तरफ से पेपर आता, कभी संगठन में स्वभाव संस्कार का पेपर आता है, परन्तु जिसने सच्चे दिल से बाबा को अपना साथी बनाया है, उन्हें समय पर अनेक प्रकार की मदद मिलती है। बाबा कहते हैं बच्चे, सच्ची दिल पर साहेब राज़ी। अगर यह अनुभव नहीं होता तो जरूर कहाँ मेरी बुद्धि के अन्दर कोई कांटा है।

6- कोई भी प्राब्लम है, कोई कार्य है, आप बाबा की मदद से उसे हल करो, लेकिन चिन्तित हो करके, डर करके उसका हल नहीं होगा। सच्ची दिल वाले की अटैचमेंट किसी भी व्यक्ति, वस्तु व वैभव में नहीं होगी। इन सबसे मुक्त होने के लिए बाबा कहते हैं बच्चे आप उड़ता पंछी बनकर रहो। लेकिन पंछी उड़ता तभी है जब उसके दो पंख है। हमारे भी दो पंख हैं—उमंग और उल्हास। उमंग उल्हास होगा तो बहुत रूचि से बाबा की याद में उड़ते रहेंगे।

7- हमें हर एक से गुण उठाने का भी अक्ल चाहिए। किसी में बहुत अच्छा ज्ञान मंथन करने का गुण है, तो मैं भी सीखूं। अगर मेरे में उमंग है तो दूसरे से वह गुण सीख सकेंगे। अगर मुझे कर्मातीत बनना है, तो दूसरी सब बातें छोड़ दो। अन्दर में यही धुन लगी रहे कि मुझे कर्मातीत बनना है। अब मेरी स्थिति में कोई भी विघ्न न हो, कोई पुराना स्वभाव न हो।

8- मीठे बाबा ने हम सबको बेगमपुर का बेफिक्र बादशाह बनाया है। मीठे बाबा का मुझे यह पर्सनल वरदान है कि हमें कभी कोई फिकर वा चिंता नहीं होती। कोई व्यर्थ चिंतन भी नहीं चलता। इसका कारण है कि हम निमित्त हैं। फिकरात करने वाला करे, मैं क्यों करूँ? तेरी रचना है तू उनका फिकर करो। जब कराने वाला वह है, जवाबदार वह है, हम निमित्त हैं, तो फिकरात किसकी? कोई बात है प्लैन करो, राय करो – लेकिन चिन्ता नहीं। चिन्ता तो चिंता के समान है।

9- आप सभी बापदादा के दिलतख्त पर बैठ जाओ तो किसी चीज़ का फिकर नहीं होगा। जो खिलावे, सो खाना है, जो पहनावे सो पहनना है, अगर उसे हमें बेगरी पार्ट में रखना होगा तो भी हम उसमें राज़ी, अगर हमें राजकुमारों की तरह पालेंगे तो भी राज़ी हैं। बाकी किस चीज़ की चिन्ता! हमारा तो एक ही मन्त्र है – “जी हज़ूर हम हाज़िर हैं”। वह हज़ूर है, जो हुक्म करे।

10- कई ऐसे योगी होते जो गुफाओं में रहते हैं। एक एक मास पानी पर रहते हैं। अगर हमारे सामने भी कोई ऐसा समय आयेगा तो हम भी पानी पर रह लेंगे इसलिए फिकर से फ़ारिग रहो। जो आवे जैसा आवे, जो खिलावे जहाँ जैसे सुलावे, सबमें सन्तुष्टमणी बनो। खुश रहो, खुशी की खुराक खाओ।

11- संगठन में चलने की विधि सीखो। संगठन में भाव-स्वभाव तो होंगे। आपस में दो लोग रहते हैं, विचार नहीं मिलते हैं तो चिंतन चलता। आप कहते यह बुरा, वह कहता यह बुरा, अच्छा यह भी बुरा, यह भी बुरा। लेकिन उसमें कोई तो अच्छाई होगी या नहीं! अच्छाई देखकर बात करो। अच्छाई देखेंगे तो बुराई आपेही खत्म हो जायेगी। जिसको बाबा कहते, बच्चे शुभ-भावना रखो। शुभ भावना से कामना पूरी होती है। कोई आपकी बात नहीं मानता है, जिद्द करता है आप वह बात छोड़ दो, आपेही ठण्डा हो जायेगा।

12- आपकी भावना है उसको अच्छा बनाने की, तो राइट बात उसे बताना आपका कर्तव्य है। अगर वह नहीं मानता है, जिद्द करता है तो उसका विकर्म बनेगा। हम उसके विकर्म के साथी न बनें। कोई ने कुछ रांग किया है, फिर भी वह अपने को रांग नहीं समझता है, तो आप सॉरी कर लो। तो वह बात खत्म हो जायेगी। उसका टेम्परेचर जो चढ़ा हुआ है वह स्वतः ही डाउन हो जायेगा। मेरे सॉरी करने से कम से कम दूसरे का दिमाग तो ठण्डा हो गया, ओ. के. जो तुम्हारी इच्छा।

13- श्रीमत कहती है रोज़ मुरली सुनो, सवेरे उठो, ज्ञान-स्नान करो, मर्यादाओं में चलो, पवित्र रहो, ब्राह्मण कुल की लाज़ रखो। दूसरों की सर्विस करो, सभी को बाबा परिचय दो, सेवा करो, योगयुक्त होकर रहो, एकाग्रता का अभ्यास करो, अशरीरी बनो। यह अभ्यास कमी-कमजोरियों को खत्म करेगा। जो भी ईश्वरीय मर्यादा के विपरीत बातें होती हैं, आपस में हंसना, बहलना, टी.वी. देखना...इन सब बातों को अब समाप्त करो। योग की कमाई करो।

14- हम ब्राह्मण कुल भूषण हैं, हमारे मुख से सदैव रत्न निकलने चाहिए, कभी कुवचन नहीं निकले। कई तो क्रोध में आकर दो चार गालियां भी सेकण्ड में किसको दे देंगे। यह हम ब्राह्मण नहीं कर सकते। क्रोधमुक्त बनने का पक्का वायदा करो। दृष्टि-वृत्ति सदा पावन रहे—ऐसी दृढ़ प्रतिज्ञा करो।

15- संसार के नियमों को खुद का नियम नहीं बना लो। संसार की रीति है टक्कर देना, विघ्न डालना, ग्लानि करना, गाली देना, विरोध करना, वैरी बनना... लेकिन हमें संसार की रीति को, संसार के नियम को खुद का नियम नहीं बनाना है। मैं असंसारी हूँ क्योंकि मैं अलौकिक की बच्ची हूँ, वह संसार से निराला है। मुझे तो सबका हितैषी बन, शुभ भावना की किरणें देनी हैं।

16- दुनिया माना ही कदम-कदम में विघ्न। जहाँ चलो वहाँ विघ्न ही विघ्न हैं। है ही कांटों का जंगल तो जहाँ चलेंगे वहाँ कांटा ही लगेगा। कोई कहते यह बड़े सहयोगी हैं, भल सहयोगी हैं लेकिन बाबा को नहीं जानते। तो वह सहयोग देते भी कई रूप से विघ्न रूप बनते हैं। अगर कोई हमारे उद्देश्य को नहीं मानते, नीति प्रमाण नहीं चलते हैं तो वह हमारे

लिए कोई न कोई विघ्न है।

17- रावण क्या-क्या करता, उसकी 100 बातें लिखो। कभी कुदृष्टि लायेगा, कभी संस्कारों की टक्कर में लायेगा, कभी ईर्ष्या में, कभी मेरेपन में, कभी जोश में... हमें उसे सेन्ट परसेन्ट जीतना है। इसमें चाहिए बहुत बारीक सूक्ष्म से सूक्ष्म बुद्धि। बाबा जो श्रीमत के इशारे देता है वह सब हमारे सामने क्लीयर आइने में होने चाहिए। उसी पर अपने को चलाना है।

18- मुझे सतोप्रधान बनने के लिए सत्व गुण धारण करने हैं। बुद्धि में जो रजो तमो के अवगुण हैं, उन्हें खत्म करना है। सवेरे से रात तक देखो मैं अपने को देवताई लाइन में लिये जा रहा हूँ? देवता-पन की क्वालिफिकेशन इमर्ज होती जाती है। देवता माना ही सत्व गुण। सत्वगुण आते हैं श्रीमत से। पहले तो अपने को शीतल करो। शीतल बनने से आवेश, जोश के संस्कार शीतल हो जायेंगे, फिर नशा रखो हम किस अथॉरिटी के बच्चे हैं। फिर बुद्धि सदैव ऊपर रहेगी, नीचे की बातों में नहीं जायेगी। अभी हमारी बुद्धि देह, देह के व्यवहार तरफ नहीं जानी चाहिए।

19- मैं दाता की बच्ची दाता हूँ मुझे देना सीखना है, जितना मैं दूँगी उतना मेरा महत्व है। एक-एक को रूहानियत देना, शीतलता देना, यह देना ही मेरी महानता है। ऐसे नहीं मैं इसे इतना स्नेह देती फिर भी यह मेरी ग्लानि करता। मुझे कोशिश करनी है एक भी काँटा न बने, अपना काम है सबको आत्मिक स्नेह का दान देना। दान देने में विघ्न तो अनेक आयेंगे क्योंकि दान लेने वाला कोई कैसा है, कोई कैसा। मैं हमेशा समझती – हर एक मेरे मास्टर हैं, मैं हर एक से सीखती हूँ।

20- कभी भी अपने दिल में किसी के प्रति नफरत नहीं उठाओ। झगड़े का कारण है एक दो से नफरत। नफरत से ही परचिन्तन शुरू होता, फिर आपस में दुश्मनी हो जाती। पहले ईर्ष्या होगी फिर नफरत पैदा होगी, फिर परचिन्तन चलेगा, फिर दुश्मनी शुरू हो जायेगी। कई बार एक बोल जीवन भर के लिए दुश्मन बना देता है इसलिए बोल पर बहुत अटेन्शन चाहिए। एक भी ऐसा शब्द नहीं बोलना जो किसी के दिल में दर्द पैदा कर दे।

21- “जिद्द का स्वभाव”, यह ब्राह्मणों में सबसे बड़ा अवगुण है, इससे बहुत ज्यादा नुकसान होता है। जिद्द मनुष्य को रसातल में पहुँचा देता है। तो जिद्द के स्वभाव से अपने को धोखा नहीं दो। समय पर ठीक निर्णय करो। एक दो को सहयोग दो, राय दो, अगर कोई जिद्द करता है तो आप हल्के हो जाओ। स्वयं को लाइट और माइट की मस्ती में रखो तो कभी जोश नहीं आयेगा।

22- नव निर्माण के लिए नम्र बनो। कोई फोर्स से कुछ कहता है तो उस समय उसकी बात मान लो। आप शीतल बन जाओ। आपस में डिबेट नहीं करो, बाद में समय देखकर आपस में रूहरिहान करो। आपकी नम्रता का प्रभाव दूसरे पर जरूर पड़ेगा। एक की चर्चा दूसरे से नहीं करो। निर्माण बनना माना समा लेना। झगड़े में पड़कर ज्ञान को नहीं छोड़ो। स्व-चिंतन में बिजी हो जाओ।

23- हमारे ब्राह्मण जीवन का फाउण्डेशन है - ईश्वरीय मर्यादा। मर्यादाओं को दृढ़ता से पालन करो। एक की छोटी गलती से पूरे ब्राह्मण परिवार का नाम बदनाम होता, किसी के कैरेक्टर पर दाग लगे, यह मेरे से सुना नहीं जाता। शॉक लगता। कोई मेरे कैरेक्टर पर आंच डाले, यह मेरे जीवन के लिए बहुत बड़ा दाग है। आप अपनी रूहानियत में मस्त रहो, यह मर्यादा का कंगन बहुत स्ट्रिक बंधा हुआ चाहिए।

24- हर एक तपस्वीमूर्त बनो, जितना तपस्वी बनो उतना धन्य बनेंगे। तप से ही महान बनेंगे, कर्मेन्द्रियों को वश करना ही तपस्या है। वृत्तियों को कन्ट्रोल करना ही तपस्या है। अतीन्द्रिय सुख के रस में रहो तो इन्द्रिय रस स्वतः समाप्त हो जायेगा। मीठे बाबा ने हम सबको चोटी से पकड़कर निकाला और अपने दिलतख्त पर बिठा लिया। हम कोटों में कोऊ सलेक्टेड डायमण्ड हैं। डायमण्ड पर किसी भी प्रकार का दाग लगाकर अपनी वैल्यू को कम नहीं करो।

25- मेरा प्राण है “मेरा बाबा” और प्रण है - बाबा हम आपके सपूत बच्चे बनकर आपका नाम बाला करेंगे। हम पवित्र बनकर पवित्र दुनिया बनायेंगे। जब तक प्राण है तब तक यह प्रतिज्ञा पक्की है। मरेंगे, जियेंगे, प्राण तजेगे लेकिन प्रण कभी नहीं छोड़ेंगे। हम देवता बनेंगे, एक धर्म, एक राज्य लायेंगे।

26- जो इस रूद्र यज्ञ में अपना सब कुछ स्वाहा करते हैं, यज्ञ उन्हें मनइच्छित फल देता है। आप फल की इच्छा नहीं करो, फल स्वतः मिल जायेगा। जब स्वाहा कर दिया फिर अगर वापस निकालने के लिए किसी ने आग में हाथ डाला तो जला हुआ ही निकलेगा। वह अग्नि हाथ जला देगी, यह अग्नि फिर दिल को जला देती है। तो यज्ञ में जब पुराने संस्कार स्वाहा कर दिये, फिर वापस ले कैसे सकते! काम, क्रोध के वश कैसे हो सकते!

27- ब्राह्मणों पर माया दो प्रकार से वार करती है एक देहधारियों में फंसने की माया, दूसरी ईर्ष्या की प्रबल माया, इसको यह चांस मिला मेरे को क्यों नहीं। मैं-मैं करना, यह है ईर्ष्या की बोली। ईर्ष्या ऊंची स्थिति से गिरा देती है। बाबा कहते बच्चे अगर कोई आगे बढ़ता है तो तुम उसे देखकर खुश हो। दूसरों को आगे बढ़ाने वाला नैचुरल आगे है। दूसरों को चांस देना ही स्वयं चांसलर बनना है।

28- जब ऊंचे ते ऊंचा बाप, इतनी ऊंची अर्थोरिटी कहता मैं तुम्हारा सर्वेन्ट हूँ, तो हमें कितना निरहंकारी होना चाहिए। अपने को सेवाधारी समझो तो स्वतः निरहंकारीपन की स्टेज आ जायेगी। अपने को निमित्त समझने से करन-करावनहार बाबा स्वतः याद आयेगा।

29- बाबा कहता मैं हूँ कालों का काल, महाकाल। मैं तुमको घर ले जाने आया हूँ, धुन है घर जाने की। अगर यही धुन रहे तो वृत्ति कहाँ भी जा नहीं सकती। कोई-कोई कहते हैं देहधारियों में वृत्ति जाती है, मेरा सवाल उठता क्यों? क्या बाबा के यह बोल रांग हैं कि निश्चयबुद्धि विजयन्ति। अगर नहीं तो कम्पलीट विजयी बनकर दिखाओ।

30- कईयों को अनुमान की बीमारी शिकार कर मार देती है। अन्दर समझते हैं फलाने ने मुझे इस नज़र से देखा, वह मेरे लिए ऐसा सोचता..... मैं तो ऐसे इज्जत से चलने वाला हूँ, मुझे यह ऐसा कहते, फिर जाकर घर में बैठ जायेंगे, तो शिकार हो गये ना!

31- अमृतवेले अन्दरग्राउन्ड होकर बाबा के पास बैठ जाओ। एक मैं लाइट बिन्दू, एक बाबा बिन्दू... एकदम ऐसी सच्ची मस्ती में खो जाओ, रोज़ अमृतवेले बाबा से दुआओं की झोली भर लो। अमृतवेले बाबा की गोदी में छिप जाओ, उसमें समा जाओ, लीन हो जाओ। फिर सारा दिन बहुत मीठा हो जायेगा। दिल बड़ी मजबूत हो जायेगी।

32- जैसे कोई छोटी चीज़ का भय बैठ जाता है तो रस्सी को भी सांप समझ भयभीत हो जाते हैं, वैसे कईयों ने माया रूपी सांप के भय का भूत दिमाग में रख दिया है। अब सांप तो है ही विषैला, वह तो जहर ही फूकेगा इसलिए सांप से खेलो नहीं, उससे किनारा कर लो। अगर उसमें इन्ट्रेस्ट लेंगे तो वह खीचेंगा, आकर्षित करेगा। जरा भी इन्ट्रेस्ट लिया तो खींच जरूर होगी।

33- बाबा कहते बच्चे, इस असार संसार का समाचार न सुनो, न देखो और न वर्णन करो। बाबा की छत्रछाया के नीचे रहो तो माया की ताकत नहीं जो मेरे पास आये। माया आती है इसका कारण तुम उसे देखते हो, बाबा की गोदी छोड़ते हो। भय का भूत बैठा हुआ है। निर्भय बनो तो माया आ नहीं सकती।

34- अन्दर में थोड़ा भी आलस्य आया तो पूरा ही खा जायेगा। आज थोड़ा आलस्य आयेगा, कहेंगे चलो क्लास में लेट जाते, क्या फ़र्क पड़ेगा। धीरे-धीरे माया पूरा ही खा लेती। सर्विस की फील्ड में भी आलस्य के अनेक बहाने बनाते। दिल सच्ची नहीं तो अनेक कारण निकलते। दिल सच्ची हो तो कोई भी कारण नहीं।

35- बाबा ने कहा बच्चे, अपने संकल्पों को स्टॉप करने की प्रैक्टिस करो। अभी-अभी साकारी, अभी-अभी

निराकारी स्थिति में स्थित होने का अभ्यास करो, इसके लिए नियम बनाओ। ड्रिल करो, अटेन्शन रखकर प्रैक्टिस करो तो बुद्धि शीतल और शक्तिशाली बन जायेगी। खुशी में रहेंगे।

36- सबसे अच्छा गुण है - सदा एक बाबा की लगन में मगन रहना। एक बाबा पर डिपेन्ड रहना। आत्माओं पर डिपेन्ड नहीं करो लेकिन बाबा पर तो डिपेन्ड करो। रहना तो संगठन में ही है, ऐसे भी नहीं कह सकते कि मेरा तो किसी से कनेक्शन नहीं, निर्माण बनकर सबको सम्मान दो। निर्मानता के लिए हमें यह दो हाथ मिले हैं। निर्मानता वाला ही नव-निर्माण का कार्य कर सकता है।

37- इस ज्ञान की मंजिल पर चलेंगे तो सहन करने की शक्ति जरूर धारण करनी पड़ेगी। यह सहनशीलता का गुण बहुत बड़ी शक्ति है, यह सर्व गुणों में महान गुण है। जो सहनशील है वह दुःख-सुख, स्तुति-निंदा, मान-अपमान सबमें समान रहता है। एकरस स्थिति में रहने के लिए सहनशक्ति चाहिए।

38- जैसे प्रकृति का नियम है – सर्दी के समय सर्दी, गर्मी के समय गर्मी होनी ही है। हमारे पास उससे बचने के साधन हैं तो उन्हें यूज करो। अभी की प्रकृति है ही तमोप्रधान, इसलिए प्रकृति पर कभी गुस्सा नहीं आता। बुद्धि में रहता कि यह तो प्रकृति का धर्म है तो उससे लड़ने नहीं जाते। फिर यह जो पारिवारिक परिस्थितियां आती हैं, उनमें दुःखी क्यों होते! जैसे प्रकृति का दुःख सुख सहन करते, वैसे यह परिवार का भी हिसाब-किताब है, उसमें भी अपनी स्थिति अप-डाउन नहीं करनी है।

39- जब मेरा कोई अपमान करता है तो मैं रंज (नाराज़) होती, लेकिन मैं सोचूं कि मैंने उसे कितना मान दिया! एक है देना, एक है लेना। अगर मुझे अपमान पर गुस्सा आता माना मैं मान की भूखी, प्यासी हूँ। मान की मांग है। मुझे मान देना है या लेना है? मान मांगना अर्थात् आत्माओं से वर मांगना। बाबा कहता मांगने से मरना भला... मैं दाता की बच्ची दाता हूँ तो लेवता क्यों बनूं!

40- अपने आपसे पूछो कि मेरी स्तुति पहले मेरे 10 मंत्री (कर्मेन्द्रियां) करते हैं? जो मुझ आत्मा का संस्कार है वह संस्कार मेरी स्तुति करता? जब मेरा संस्कार मेरी स्तुति करे अर्थात् आर्डर में रहे तब दूसरे भी स्तुति करेंगे। क्या मेरा मन सदा मेरे चरणों में रहता है? मेरा मन सदा स्वच्छ पवित्र और सदा ऊंचा रहता है? मेरा पहला मंत्री मेरे आर्डर में है? आर्डर में है तो शुद्ध संकल्प स्वतः रहेंगे। अगर मैं ऐसी ऊंची स्थिति पर रहूंगी तो सब मेरा मान स्वतः करेंगे।

41- समय प्रमाण एकाग्रता का बहुत अच्छा अभ्यास करो। एक सेकेण्ड में संकल्प को स्टॉप कर लो और उपराम हो जाओ। इस देह से उड़ जाओ, बाबा के स्वीट साइलेन्स होम में बैठ जाओ, तब यह जीवन प्यारी-न्यारी बनेगी। फिर कहेंगे राजऋषि, ज्ञानी, योगी तू आत्मा। अब प्रैक्टिकल बाबा को ऐसा सबूत देना है। अभी अपने आपको चेकिंग करने का टाइम है इसलिए जो कुछ बीता है, उन सबका निवारण करके हमें अब बाबा के पास पहले फरिश्तों की दुनिया में चलना है फिर अपने मूलवतन में जाना है।

42- अब अपनी एक-एक कर्मेन्द्रिय को दिव्य बनाओ। चेक करो - मेरे कान दिव्य बने हैं? अभी तक कनरस सुनने का शौक है? हमारे यह नयन दूसरों को प्यार की भावना से, भाई-भाई की दृष्टि से बाबा के रत्नों को देखने के लिए हैं। यह नयन किसी को बुरी दृष्टि से, द्वेष दृष्टि से तो नहीं देखते? ऐसे एक एक कर्मेन्द्रिय को चेक करो और इन्हें दिव्य बनाओ।

43- जरा भी मूडआफ करने की आदत न हो। मूड आफ माना ऑफ। उसे प्रेम की आफर मिल नहीं सकती। जहाँ दिव्यता है वहाँ मान अपमान का सवाल समाप्त हो जाता है। जहाँ मांगते हो कि मान मिले, वहाँ वह दूर हो जाता है। हम राजाओं के राजा हैं, हम कभी मांग नहीं सकते। राजा कभी नहीं कह सकता कि यह चपरासी मेरी इज्जत गंवाता है। राजा का तो आर्डर चलता। तो अपने आपसे पूछो मैं राज्य-अधिकारी हूँ या मैं अपने चपरासियों के अधीन हूँ?

44- हम सब दिलाराम बाप के दिलवाले बच्चे हैं। जब दिलाराम को दिल दे दी तो फिर कोई देहधारी आकर्षित कैसे कर सकता! किसी भी तरफ आकर्षित होना माना दिलबेकू बनना। बाबा ने बच्चों को शरीर निर्वाह करने की छुट्टी दी है, गन्दे चित्र देखने, नाविल्स आदि पढ़ने की छुट्टी नहीं दी है। कई कहते हैं दिल उदास होती है तो पढ़ लेता हूँ। पढ़ोगे, देखोगे तो जरूर वह बुद्धि को डिस्टर्ब करेगा।

45- कभी भी अपना माथा क्यों-क्या के प्रश्नों में गर्म नहीं करो। दिमाग को शीतल कुण्ड बनाओ। शीतल काया वाले योगी बनो। भले तुम्हें गिराने के लिए कोई ने गद्दा खोदा हो, लेकिन तुम अगर सच्चे हो, तुम्हारे दिल में उसके प्रति शुभ भावना है तो बाबा तुम्हारी रक्षा करेगा। तुम्हारे अन्दर कभी भी अशुभ भाव न हो। किसी को श्राप देने वाले दुर्वासा नहीं बनो। राजयोगी कभी दुर्वासा नहीं बन सकते।

46- बाबा की श्रीमत है बच्चे तुम क्षीरखण्ड होकर रहो। स्वप्न में भी लूनपानी नहीं होना। अगर कोई लूनपानी होते है तो ब्रह्माकुमार कुमारी कहला नहीं सकते। मेरा काम है दूध-चीनी होकर रहना। अगर मेरे में नमक (खारापन) होगा तो दूसरे भी मेरे ऊपर नमक डालेंगे। सदा क्षीरखण्ड रहना माना एकता में, युनिटी में रहना। पढ़ाई छोड़ना माना लूला लंगड़ा बनना।

47- यह हृदय हमारे बाबा का घर है, जिनके हृदय में प्रेम है, उनके हृदय में बाबा की याद है। उनके हृदय में बाबा के सब रत्न हैं। सबको चलाने वाला बाबा है। बाबा के सब प्यारे बच्चे हैं। बेहद की भावना रखो। हदों में नहीं आओ।

48- बाबा ने हमें इस बेहद झाड़ की जड़ों में राजयोगी बनाकर बिठाया है – नव निर्माण के लिए। हमें याद की शक्ति का, पवित्रता की शक्ति का जल डालना है। हमारा बाबा फाउन्डर है, उसने हमें फाउन्डेशन में बिठाया है। इसमें योग का बीज डालो, पवित्रता का बीज डालो और इस ज्ञान की शक्ति से इस इमारत को मजबूत करो। हम पवित्रता का दान देने वाले योगी बच्चे हैं, योग और पवित्रता का ही सहयोग हम दे रहे हैं। यही नव निर्माण का आधार है। इसी आधार पर सृष्टि का उद्धार होना है।

49- बाबा ने हमें मंत्र दे दिया - बच्चे जो देखते हो वह न देखो, जो नहीं दिखाई देता है उसे याद करो। भिन्न-भिन्न संस्कार तो कर्मों के हिसाब-किताब हैं। मुझे कर्मों का खाता चुक्त्तू करना है, ना कि बनाना है। मैं सब हिसाब-किताब चुक्त्तू करने, कर्मातीत बनने के लिए बैठी हूँ फिर मैं किसी भी संस्कारों वश अपना हिसाब-किताब क्यों बनाऊँ!

50- हम योगियों के सभी सम्बन्ध एक से हैं, एक से ही हमारा नाता है, एक से ही हमारा रिश्ता है। एक के हम हैं। एक ने ही हमें अपना बनाया, वन्डर यह है कि वह एक हरेक का है। हरेक के सारे सम्बन्ध उनसे हैं। यह एक ही सब बच्चों का सर्व सम्बन्धी है इसलिए हम सभी वन हैं, वननेस है, टू थी नहीं। हम सभी के इस राजयोगी जीवन के नियम और मर्यादाएं भी एक जैसी हैं। हम सब एक ढांचे में पले हुए बच्चे हैं। बाबा ने हमें मंत्र दिया है - एकमत, एकरस और एँकानामी। श्रीमत है हमारी मुरली। मुरली ही हमारी पढ़ाई अथवा धारणा है। जहाँ एक मत है वहाँ द्वेत नहीं, द्वेष नहीं, राग नहीं। ना कोई भेद है, ना कोई झगड़े। हम सबके बीच में एक बाबा है, इसलिए कभी दो मतें हो नहीं सकती।

51- बाबा कहते बच्चे, तुम अपनी देह से भी बेगर बन जाओ। तो चेक करो कि मेरे में देह-अभिमान है? मैंने देह अभिमान का त्याग किया है? एक हैं त्यागी, दूसरे हैं सर्वश त्यागी, इसमें ए टू जेड सब त्याग आ गया। लोभ, मोह, देह-अभिमान... सब आ जाता है। जब हर कदम में त्याग हो तब देही-अभिमानी कहेंगे। पहले चाहिए देह से लगाव का त्याग, फिर लोभ-लालच, इच्छा-आशायें इन सब बातों का त्याग सहज हो जाता है। ऐसे त्यागी को ही योगी, तपस्वी कहा जाता है। ओम् शान्ति।